और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए।। ११८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज की वाणी के बिना और कुछ नहीं कहूंगी। इनको वह मोमिन ही देख सकेंगे, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपनी निसबत।
असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत।। ११९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपनी मूल परआतम को देखो जो परमधाम के अन्दर मूल-मिलावा में बैठी है।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ९१२ ॥

बाब असराफील का

तो असराफीलें आखिर, कुरान को गाया।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया।। १ ।।

कुरान में लिखे अनुसार असराफील फरिश्ता श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया और उसने कुलजम सरूप की वाणी को आकर जाहिर किया, वह आखिरत के समय आया, इसलिए इतना बड़ा काम किया।

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया।
सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया।। २ ।।

रसूल साहब ने कुरान में पहले से ही यह लिखा था कि आखिर के समय असराफील फरिश्ता आएगा। उसी के अनुसार असराफील फरिश्ता अपने समय पर आया है।

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज।
ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज।। ३ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में लिखा है कि ऐसी सुन्दर वाणी जो असराफील आकर कहेगा, किसी ने नहीं सुनी होगी, क्योंकि इससे पहले फरिश्ता कभी नहीं आया जो अब आया है।

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो वायदे किए और मुहम्मद साहब ने कुरान में लिखे वह असराफील फरिश्ते ने आकर सब पूरे किए। असराफील ने कुलजम सरूप की वाणी का सूर फूंका और सबके दिल के संशय मिटा दिए। इस तरह से अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया।
गाया खुस आवाज सों, कौल सिर चढ़ाया।। ५ ।।

कुरान के अन्दर जो रहस्य छिपे थे, वह सब जाहिर किए और बड़ी मधुर आवाज से श्री कुलजम सरूप की वाणी को गाया और अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए।। ६ ।।

कुरान में लिखे अनुसार ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद चारों पैगम्बर अपने वायदे के अनुसार श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गए हैं। उन्होंने भी खुदा के हुकम को पूरा किया।

Nijanand App

पढ़ें किताबें अपनी, पैगंमर तीन।
सो आए बीच आखिर, ए जो हकीकी दीन।।७।।

यह तीन पैगम्बर (ईसा, मूसा और दाऊद) अपनी अंजील (रास), तौरेत (कलश) और जंबूर (प्रकाश) नई किताबों के साथ इमाम मेंहेंदी के अन्दर आए और सच्चे दीन निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया।

आया असराफील आखिर, महंमद मेंहेंदी साथ।
मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ।।८।।

आखिर को असराफील फरिश्ता इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया, जिसने अन्दर बैठकर कुरान के सभी रहस्यों को खोल दिया।

हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप।
सो पढ़े किताबें फुरमाए से, अपनी ले आप।।९।।

ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद सभी पैगम्बर अपने समय के अनुसार आकर इमाम मेंहेदो में मिले। अब वह अपनी-अपनी नई किताबों को रास, तौरेत, कलश, जंबूर और सनन्ध जाहिर कर रहे हैं।

एक तौरेत और अंजील, तीसरी जो जंबूर।
सो ए किया सब जाहेर, छिपा था जो नूर।।१०।।

तौरेत, अंजील और जंबूर में जो रहस्य छिपे थे, वह इन नई किताबों में जाहिर किए।

एक मूसा और रूहअल्ला, तीसरा जो दाऊद।
ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद।।११।।

मूसा, ईसा और दाऊद तीनों यहूदियों में आए थे, क्योंकि उस समय मुसलमान धर्म नहीं था।

ए किताबें जो आखिरी, आखिरी रसूल ल्याए।
सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीलें गाए।।१२।।

आखिरी किताब (कुरान) रसूल साहब लाए, जिसके छिपे रहस्यों को अब असराफील फरिश्ता श्री प्राणनाथजी के तन से जाहिर कर रहा है।

सो साहेदी सिपारे चौबीस में, लिखियां ठौर ठौर।
हक हादी मोमिन बिना, जाने कौन और।।१३।।

इस बात की गवाही कुरान के चौबीसवें सिपारे में अलग-अलग ठिकाने पर लिखी है। इसे राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिनों के अतिरिक्त और कौन जान सकता है?

मेयराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखिरी बिन।
और पैगंमर कई हुए, कई कहावें रोसन।।१४।।

आखिरी पैगम्बर रसूल साहब के बिना किसी को मेयराज (दर्शन) नहीं हुआ। पैगम्बर बहुत हुए हैं, जो कहते हैं कि हमें पैगम्बरी मिली है।

पर ए जो अर्स अजीम, रहें हमेसा मोमिन।
ए रूहें नजीकी हक के, इनों अर्स बीच तन।।१५।।

परन्तु परमधाम की बातें हमेशा मोमिनों के पास रहती हैं। यह श्री राजजी महाराज के नजदीकी हैं और इनके मूल तन परमधाम के हैं।

Nijanand App

महंमद की हदीस में, खबर दई भांत इन।
कह्या सिरदार रुहअल्ला, बीच अर्स रूहन।। १६ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में इस तरह से लिखा है कि रूहों के बीच सिरदार रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी हैं।

बीच बका लाहूत में, जो रूहें मोमिन।
तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन।। १७ ।।

अखण्ड परमधाम में जो रूह (मोमिन) हैं, वह और मुहम्मद की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी सभी एकतन हैं।

अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी।
कही तीसरी आखिर, सूरत जो हकी।। १८ ।।

सबसे पहले बसरी सूरत रसूल साहब आए। फिर मलकी सूरत श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए। आखिर में हकी सूरत श्री प्राणनाथजी की कही है।

ए तीनों बातून में एक हैं, जो देखिए हकीकत।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत।। १९ ।।

बसरी, मलकी और हकी बातून में एक ही स्वरूप हैं और यदि हकीकत में देखें तो इन तीनों से ही अखण्ड परमधाम की मारफत का ज्ञान मिलता है।

ए सबे बीच अर्स के, कहावें वाहेदत।
एक तन रूहें अर्स की, हक हादी सूरत।। २० ।।

यह तीनों और मोमिन परमधाम में वाहेदत (एकतन) हैं। यह तीनों सूरतें और मोमिन श्री राजजी महाराज की ही अंगनाएं हैं।

और न कोई पोहोंचिया, बड़े अर्स में इत।
आगे जाए जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत।। २१ ।।

इस बड़े परमधाम में दूसरा कोई नहीं पहुंचा। यहां तक कि जबराईल भी नहीं जा सका। कहता है मेरे पर जलते हैं।

और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर।
जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर।। २२ ।।

दुनियां में और भी कई देवी-देवता, पैगम्बर हुए हैं, परन्तु जबराईल फरिश्ते के बिना बुजरकी किसी को नहीं मिली।

और सबे ताबे कहे, जबराईल के।
जिंन देव या आदमी, या बुजरक फरिस्ते।। २३ ।।

यह सभी देवी, देवता, पैगम्बर, आदमी, और प्रेत जबराईल के अधीन हैं।

खास उमत महंमद की, जो कही अर्स रबानी।
दूजी गिरो फरिस्तन की, जो कही नूर मकानी।। २४ ।।

श्री प्राणनाथजी की खास उमत को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहते हैं। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि की है, जो अक्षरधाम की है।

Nijanand App

और बुजरक फरिस्ता आखिरी, कह्या जो असराफील।
किए जाहेर मगज मुसाफ के, सकसुभे न आड़ी खील।। २५ ।।

सबसे बड़ा आखिरी बुजरक फरिश्ता असराफील है, जिसने कुरान के सभी छिपे भेदों को जाहिर कर दिया और सुई की नोंक बराबर भी संशय नहीं रखा।

असराफीलें बीच अर्स के, सब हकीकत लई।
सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही।। २६ ।।

असराफील फरिश्ता ने परमधाम की सब हकीकत लेकर कुरान के छिपे रहस्य को खोलकर जाहिर कर दिया।

ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया।। २७ ।।

वरना जबराईल फरिश्ता मुहम्मद के पास अल्लाह कलाम (कुरान) का ज्ञान लेकर आया था और वह भी कुरान के छिपे रहस्यों को जाहिर नहीं कर सका, जिनको आखिर में असराफील ने आकर श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर जाहिर किए।

देखो पैगंमर आखिरी, रसूल केहेलाया।
सो असराफीलें गाए के, बातून सब बताया।। २८ ।।

अब देखो आखिरी पैगम्बर मुहम्मद साहब जो कुरान लाए वह रसूल कहलाए। अब उस कुरान के बातूनी रहस्यों को असराफील फरिश्ते ने श्री प्राणनाथजी के तन में बैठ कर जाहिर किया।

कह्या पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर।। २९ ।।

मुहम्मद साहब को आखिरी पैगम्बर कहा है और असराफील को आखिरी फरिश्ता। अब विचार करके देखो। दोनों अलग कैसे हो सकते हैं? यह दोनों ही श्री प्राणनाथजी के अन्दर आकर बैठे हैं।

असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के माहें।
और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहें।। ३० ।।

असराफील फरिश्ता परमधाम के अन्दर सब जगह घूमा, जबकि जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम की हद को नहीं छोड़ सका।

एक नूर और नूरतजल्ला, कहे ठौर दोए।
ए नाहीं जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए।। ३१ ।।

एक अक्षरधाम दूसरा परमधाम, दोनों अखण्ड धाम बताए हैं। यह परमधाम की वाहेदत श्री राजजी से अलग नहीं है। दोनों ही अखण्ड हैं।

एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत।
ए सोई जानें हक अर्स की, जाए खुली मारफत।। ३२ ।।

एक जाहिरी में आम खलक जीवसृष्टि और दूसरी खास ईश्वरीसृष्टि है। तीसरी परमधाम के अन्दर रहने वाली ब्रह्मसृष्टि है। इन तीनों में से जिनको मारफत का ज्ञान मिल गया है, वह ही श्री राजजी महाराज के अर्श की सब हकीकत जानते हैं।

Nijanand App

जिनों खुले मगज मुसाफ के, माएने हकीकत।
सकसुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत।। ३३ ।।

जिनको श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप वाणी खुल गई है, उन्हें ही कुरान की हकीकत के भेदों का रहस्य मिल गया और उनके अन्दर किसी प्रकार के संशय नहीं रह गए।

सकसुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिंन।। ३४ ।।

दुनियां के आदमी, देवी-देवता और भूत-प्रेत सभी क्यों न मिल जाएं, तो भी जागृत बुद्धि की कुलजम सरूप की वाणी के बिना उनके संशय नहीं मिट सकते।

असराफील के अमल में, सकसुभे नहीं कोए।
कयामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए।। ३५ ।।

श्री प्राणनाथजी के आने से ही सबके संशय मिट गए और कुरान के सभी भेद खुल गए। इनसे ही सभी को कयामत का फल मिला।

आखिर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान।
दिन होवे तिन मारफत, हक अर्स पेहेचान।। ३६ ।।

श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी से श्री राजजी महाराज और परमधाम की पहचान हो जाएगी और आखिर में ब्रह्माण्ड को मुक्ति प्रदान करने का फल भी इन्हीं से मिलेगा। ऐसा कुरान में कहा है।

तो कह्या असराफील, आवसी आखिर।
सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरे फजर।। ३७ ।।

कुरान में कहा है कि असराफील फरिश्ता आखिर में आएगा और मारफत सागर के ज्ञान से सवेरा करके अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर सबको अखण्ड मुक्ति का फल देगा।

लिखे सबों के मरातबे, ए जो बीच फुरकान।
सो ए जाने रूहें मोमिन, या जानें हादी सुभान।। ३८ ।।

कुरान में इस तरह से सबके अलग-अलग दर्जे लिखे हैं, जिनको या तो मोमिन जानते हैं या श्री प्राणनाथजी महाराज जानते हैं।

ए जो गिरो फरिस्तन की, जाको नूर मकान।
रूहें बीच नूरतजल्ला, सूरत रेहेमान।। ३९ ।।

यह जो ईश्वरीसृष्टि कही है, इसका घर अक्षरधाम है और परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज की अंगना रूहें रहती हैं।

जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर।
सो ए रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर।। ४० ।।

जबराईल फरिश्ता सब पैगम्बरों का सिरदार है। यह अक्षरधाम की हद तक आया। मुहम्मद साहब के साथ परमधाम नहीं आ सका।

Nijanand App

और कोई अर्स अजीममें, पोहोंच ना सकत।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत।। ४१ ।।

परमधाम के अन्दर श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहें और बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतों के अतिरिक्त और दूसरा कोई नहीं पहुंच सकता।

और मोमिन बोल ना बोलहीं, एक मेयराज बिन।
जिनपे इलम हक का, लदुन्नी रोसन।। ४२ ।।

मोमिनों के पास ही कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान है, जिससे उनको परमधाम की पूरी पहचान है, इसलिए अब इस वाणी के बिना दूसरी बात वह नहीं करेंगे।

सोई अर्स हक का, हादी रूहों वतन।
इत हक हादी रूहों सूरत, अर्स के तन।। ४३ ।।

जो श्री श्यामाजी और रूहों का घर है, वही श्री राजजी महाराज का घर है। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहों के स्वरूप विराजे हैं।

फरिस्ते अर्स सूरत नहीं, इनों जुदी असल।
पैदास कही फरिस्तन की, पेड़ से नकल।। ४४ ।।

ईश्वरीसृष्टि के तन अक्षरधाम में नहीं हैं। इनकी पैदाइश ही अलग है। ईश्वरीसृष्टि की पैदाइश अक्षर की सुरता से हुई है।

रूहें असल हक कदमों, है अर्स में सूरत।
तो कहे हक हादी रूहें, अर्स की वाहेदत।। ४५ ।।

ब्रह्मसृष्टि के मूल तन श्री राजजी महाराज के चरणों में बैठे हैं, इसलिए श्री राजश्यामाजी और रूहों को अर्श की वाहेदत, एकतन और एकदिल कहा है।

बीच अर्स अजीम के, सूरत बका हक।
मोमिन हक इलम से, चीन्हें मुतलक।। ४६ ।।

परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज साक्षात् विराजमान हैं। कुलजम सरूप की वाणी से मोमिन श्री राजजी को पहचानते हैं।

मोमिन अर्स रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक।
हक इलम यों केहेवहीं, इनमें नाहीं सक।। ४७ ।।

परमधाम के मोमिनों जैसी किसी की महिमा नहीं है, ऐसा कुलजम सरूप की वाणी बतलाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

लिख्या अमेतसालून में, बड़ाई रूहन।
देखो इत दिल देय के, निसां करो मोमिन।। ४८ ।।

कुरान के अमेत सालून प्रकरण में रूहों की बड़ाई लिखी है। उसको दिल से देखकर, मोमिनो! अपनी तसल्ली कर लो।

Nijanand App

हक हादी वाहेदत बीच में, कहे जो मोमिन।
इलम कहे इनों सिफतें, और नाहीं सुकन।।४९ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिनों के बीच एकदिली है, जिसे वाहेदत करके लिखा है, इसलिए कुरान में मोमिनों की सिफत लिखी है और कोई दूसरी बात नहीं है।

सोई कहिए अर्स वाहेदत, जो हैं हक की जात।
हक हादी रूहों बीच में, कोई और न समात।।५० ।।

श्री राजजी महाराज की वाहेदत उन्हीं को कहा है जो उनकी अंगना है। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियों के बीच कोई दूसरा आ नहीं सकता।

पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित।
दूजा हुकम कादर का, कई करत कुदरत।।५१ ।।

परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज की साहेबी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दूसरा श्री राजजी महाराज का हुकम ही है, जिससे अक्षर ब्रह्म कई ब्रह्माण्ड बनाते, मिटाते रहते हैं।

सो करें जाहेर हक की, कई भांतों सिफत।
फानी छल झूठा नजरों, हुकमें देखत।।५२ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम ही कई तरह से श्री राजजी महाराज की महिमा गाता है और एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड झूठे बनाता-मिटाता रहता है।

महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना।
आंखां खोले ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना।।५३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी और रूहों को यह झूठा खेल दिखाकर श्री राजजी महाराज इसे नष्ट कर देंगे। ठीक उसी तरह से जैसे नींद से जागने पर स्वप्न टूट जाता है।

चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर।
ऐसे खेल पैदा फना, होवें कई नूर नजर।।५४ ।।

चौदह लोक, जमीन और आसमान सहित कई खेल अक्षर की नजर के सामने हुकम बनाता-मिटाता रहता है।

फरिस्ते देव जिंन आदमी, ए जो चौदे तबक।
पैदा फना हो जात हैं, नूर के पलक।।५५ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल के अन्दर फरिश्ते, देवी, देवता, भूत, प्रेत, आदमी तथा चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड बनते-मिटते रहते हैं।

कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही।
दूजी काहूं कितहूं, जरा कही न जाई।।५६ ।।

केवल एक परमधाम अखण्ड है, जहां श्री राजजी महाराज की साहेबी है। दूसरा कहीं कुछ भी नहीं है।

Nijanand App

देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे।
ए हक हादी रूहें निसबती, जो बन्दे अपने प्यारे।।५७।।

कुरान के नवें सिपारे में लिखा है कि श्री राजजी महाराज ने रूहों को संसार का खेल दिखाया है। यह श्री श्यामाजी और रूहें श्री राजजी के अपने प्यारे अंग हैं।

हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक।
और जरा नहीं कहूं कितहूं, यों कहे इलम हक।।५८।।

इस खेल में आकर अपने प्यारे श्री राजजी महाराज के बिना यदि कोई मोमिन किसी और को परमात्मा बनाता है, तो वह खेल में बेइमान है, क्योंकि कुलजम सरूप की वाणी के अनुसार श्री राजजी महाराज के बिना कोई और कुछ भी नहीं है।

हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा।
ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे से न्यारा।।५९।।

यह सारा झूठा ब्रह्माण्ड श्री राजजी महाराज के हुकम का पसारा दिखाई देता है। जो बनता-मिटता है, जबकि श्री राजजी महाराज सदा से ही इससे अलग हैं।

सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह।
सो देखो नीके कर, अपना दिल देय।।६०।।

कुरान के उन्तीसवें सिपारे में श्री राजजी महाराज ने लिखा है, उसे ध्यान देकर अच्छी तरह से देखो।

जब आई आयत हकीकत, तब पीछली करी मनसूक।
ए हुकम तोड़े सो क्यों देखे, जो फोड़ जमात हुए टूक टूक।।६१।।

जब श्री राजजी महाराज की हकीकत और मारफत का ज्ञान कुलजम सरूप की वाणी आ गई, तब पिछली किताब कुरान को परिवर्तन कर दिया। जिसको श्री राजजी महाराज की वाणी पर यकीन नहीं आया, वह इन रहस्यों को कैसे समझे? इसलिए स्वामीजी से जुदा होकर बिहारीजी ने अलग चाकला पन्थ चलाया।

हादी देखाए भी तो देखे, जो दिल होए आकीन।
सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड़ फिरे सब दीन।।६२।।

श्री प्राणनाथजी महाराज तो पहचान कराना भी चाहते हैं, परन्तु वह उनको तब समझे जब उनके दिल में वाणी पर यकीन हो। अब ऐसा कठिन समय आ गया है कि सबने दीन-धर्म को छोड़ दिया है।

न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन।
मनसूख लिख्या सबन को, जो गए छोड़ आकीन।।६३।।

यदि किसी को इस बात पर विश्वास न हो, तो देखो। कुरान के पहले नियमों को अनावश्यक बताकर रद्द कर दिया गया, क्योंकि लोगों को कुरान की सच्चाई पर विश्वास नहीं रहा।

लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत।
एक दीन होसी सबे, कही इन सरत।।६४।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि जब हकीकत के सारे रहस्य आखिरत को खुल जाएंगे, तो सब दुनियां एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय में आ जाएगी।

Nijanand App

दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद।
ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद।। ६५ ।।

मिटने वाले संसार के लोगों को अज्ञानता के अन्धकार के कारण सच्चा रास्ता नहीं मिलता। जब मारफत के ज्ञान कुलजम सरूप की वाणी की पहचान सबको हो जाएगी, तब सबकी इच्छा पूर्ण हो जाएगी।

दूर किए तारीकी रात के, सितारा करता था मैं मैं।
डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद डूब्या मैं मैं सें।। ६६ ।।

अज्ञानता के अन्धकार में धर्म-सम्प्रदायों के आचार्य लोग अपने अहंकार में डूबे थे और अपने को ही सबसे बड़ा मानते थे। श्री कुलजम सरूप की वाणी जो मारफत के सूर्य का ज्ञान है, उसने सबके अहंकार को तोड़कर समाप्त कर दिया।

सो सितारा सरीयत का, करता था रात की रोसन।
सो नाबूद हुआ देख सूरज, ऊगे मारफत दिन।। ६७ ।।

अज्ञानता की रात्रि के अन्धकार में जो कर्मकाण्ड (शरीयत) का ज्ञान चमक रहा था, वह कुलजम सरूप की वाणी जो अखण्ड सूर्य का ज्ञान है, देखकर नष्ट हो गया।

अर्स बका देखाए के, करसी सबों हैयात।
असराफील खोल मुसाफ, करसी सिफात।। ६८ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान के सभी रहस्यों को खोलकर अखण्ड परमधाम की पहचान कराई। अब सबके दिलों को कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल करके अखण्ड बहिश्तों में कायमी देगा।

कलाम अल्ला का बातून, देखो हक इलम ले।
महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए।। ६९ ।।

कुरान के बातूनी रहस्यों को कुलजम सरूप साहब की वाणी से समझो। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज मोमिनों को इस तरह से निःसन्देह करके निर्मल करेंगे।

चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद।
लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, कयामत एकै भेद।। ७० ।।

चारों किताबों और चारों वेदों में अलग-अलग ठिकाने पर अलग-अलग तरीके से कयामत के जाहिर होने की बातें लिखी हैं।

किताबें दुनियां मिने, कहूं केती गिनती अनेक।
तिन सबोंमें आखिरी, कलाम अल्ला विसेक।। ७१ ।।

दुनियां में बहुत धर्मग्रन्थ हैं, जिनकी गिनती नहीं बताई जा सकती, परन्तु सबमें कुलजम सरूप साहब की वाणी ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की वाणी है।

तिन सबों किताबों बीचमें, बिध बिध लिखी कयामत।
तिन सबों जिकर करी, आखिर बड़ी सिफत।। ७२ ।।

इन सब धर्मग्रन्थों ने कयामत की तरह-तरह से बातें लिखी हैं। सबके बीच आखिर में पारब्रह्म आकर सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे। इसकी महिमा गाई है।

Nijanand App

असराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा।
तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा।।७३ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान और सभी धर्मग्रन्थों की भविष्य की वाणी को जाहिर कर दिया, इसलिए यह जागृत बुद्धि का फरिश्ता सब फरिश्तों से श्रेष्ठ खुदा के नजदीक हो गया।

जिंन देव या आदमी, या जिमी आसमान फरिस्ते।
तीन सूरत महंमद की, है हादी सिर सब के।।७४ ।।

भूत-प्रेत, देवी-देवता और आदमी या आसमान-जमीन के रहने वाले तथा बसरी, मलकी और हकी सूरत इन सबके मालिक श्री प्राणनाथजी महाराज हैं।

या जिमीन का तिनका, या बड़ा दरखत।
कही सिर सबन के, महंमद हिदायत।।७५ ।।

संसार में जमीन का तिनका, छोटा या बड़े से बड़ा वृक्ष हो, यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम के अधीन हैं।

जमाना खाली नहीं, बिना महंमदी कोए।
करत रोसन सबन में, चिराग नबी की सोए।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम के स्वरूप रसूल साहब, मलकी स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) बीच में और हकी स्वरूप इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज के इन तीनों स्वरूपों से ही सारे संसार को ज्ञान मिल रहा है।

इन विध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान।
ले मगज माएने मोमिन, सब विध करें पेहेचान।।७७ ।।

इस तरह से मुहम्मद साहब की हदीसें और कुरान कहता है कि इनके जो रहस्य सब तरह से समझेंगे, वह मोमिन हैं (उनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा)।

लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों माहें।
हादी इन महंमद बिना, और क्रोई किन सिर नाहें।।७८ ।।

आयतों, हदीसों और सूरतों में लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई कहीं नहीं है।

अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखिर।
खाली नहीं बिना खलीफे, महंमद के बिगर।।७९ ।।

इसलिए शुरू में, बीच में और आखिर में बसरी, मलकी और हकी सूरत के ज्ञान की ही महिमा गाई है। इन तीन के बिना और दूसरा कोई भी सतगुरु नहीं बना है।

यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हों अब।
सो मैं आखिर आए के, तमाम करोंगा सब।।८० ।।

मुहम्मद साहब हदीस में कहते हैं कि मैं अब जो काम कर रहा हूं और जिन कामों के लिए वायदा कर रहा हूं, उनको आखिर में आकर सब पूरा करूंगा।

Nijanand App

मैं आऊंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं।
मेरे कूच नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम खुले मुझ से।।८१ ।।

मैं अपने यारों के वास्ते आऊंगा और अपनी छिपी बातों का रहस्य स्वयं आकर खोलूंगा। मेरे संसार से चले जाने के बाद मेरे अतिरिक्त इन रहस्यों कोई खोल नहीं सकेगा।

मोमिन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबां ले आए।
ताही जुबां से तिन को, महंमद दें समझाए।।८२ ।।

मोमिन जिन जिन प्रान्तों में आए हैं, वह अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज उनकी भाषा में उन्हें समझाएंगे।

नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर।
जरा एक महंमद बिना, नहीं काहूं जहूर।।८३ ।।

रसूल मुहम्मद भी श्री राजजी महाराज के अंग का नूर हैं। सारी दुनियां इनके हुकम से बनी है, इसलिए यह जाहिर हो गया कि मुहम्मद के बिना कहीं कुछ नहीं है।

कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन।
इन तीनों सिर खिताब, गिरो रबानी हकीकी दीन।।८४ ।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें आखिरी जमाने के खाविंद हैं। इन तीनों सूरतों के सिर मोमिनों को सच्चा ज्ञान देने का अधिकार है, खिताब है।

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत।
ए तीनों महंमद की, बीच अर्स वाहेदत।।८५ ।।

बसरी, मलकी और हकी तीनों एक स्वरूप हैं और परमधाम के बीच एकदिल हैं।

और गिरो रूहें फरिस्ते, दोऊ कही रबानी।
मांहें तीन सूरत महंमद की, जिन मुरग बूंदें लई पेहेचानी।।८६।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो खुदाई जमातें हैं। इनके वास्ते ही बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीन सूरतें आईं हैं। वह आकर इन मोमिनों को ढूंढ़ लेंगी (जो मुर्ग श्री श्यामाजी महारानी के पर झटकने से बूंदें गिरी थीं)। जिन तनों में ब्रह्मसृष्टि आई हैं, उन्हें मोमिन कहते हैं।

ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार।
ए सब हक इलमें, कर देखो विचार।।८७ ।।

बसरी, मलकी और हकी सूरत इन दोनों गिरोह ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि में सिरदार मानी गई हैं। इन सब बातों का कुलजम सरूप की वाणी से विचार करके देख लो।

ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान।
ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान।।८८ ।।

इन सबको छोड़कर जमीन या आसमान की जो भी चौदह तबकों की दुनियां है, उसका कुछ भी अस्तित्व नहीं है (रूप नहीं है)।

Nijanand App

लिख्या चौथे सिपारे, ए चौदे तबक कहे जे।
ए जरे जेता नहीं, दो टूक होवें जिनके।। ८९ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि यह चौदह तबक का ब्रह्माण्ड इतना भी नहीं है कि इसके दो टुकड़े किए जा सकें।

रात अमल सरीयत का, चल्या लदुन्नी बिन।
हक इलमें रात मेट के, किया जाहेर बका दिन।। ९० ।।

अज्ञान के अन्धकार में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित धर्म, पन्थ और सम्प्रदाय चलते रहे। उनके पास जागृत बुद्धि की तारतम वाणी का ज्ञान नहीं था। अब कुलजम सरूप की वाणी से इनकी अज्ञानता का अन्धकार मिट गया और अखण्ड परमधाम का सूर्य मारफत ज्ञान दे दिया, जिससे सबको अखण्ड परमधाम की पहचान हो गई।

कह्या दिल मंहमद का, सूरज मारफत।
हकीकत खोले पीछे, होसी हक लज्जत।। ९१ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दिल को मारफत का सूर्य कहा है। कुलजम सरूप की वाणी की हकीकत जाहिर करने पर श्री राजजी महाराज के सुखों का आनन्द आएगा।

एही लदुन्नी हक इलम, करसी फजर।
देखसी मोमिन अर्स को, रूह की खोल नजर।। ९२ ।।

इस कुलजम सरूप की वाणी से अज्ञानता का अन्धकार मिट कर सवेरा हो जाएगा और मोमिन अपनी आत्मदृष्टि से परमधाम को देखने लगेंगे।

ए सिपारे उनईसमें, लिखी हकीकत।
सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत।। ९३ ।।

मारफत के ज्ञान की हकीकत कुरान के उन्नीसवें सिपारे में लिखी है। उसे अच्छी तरह देखो और समझो।

दरम्यान जो साया कही, आगे ऊग्या दिन।
सूरज दिल महंमद का, हुआ नूर रोसन।। ९४ ।।

मारफत सागर सम्वत् १७४८ में उतरा। इसी को श्री प्राणनाथजी के दिल का सूर्य कहा है, जिससे संसार में उजाला हो गया। इससे पहले सौ साल की रात कही है।

ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरीयत।
सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत।। ९५ ।।

अज्ञानता के अन्धकार की रात्रि में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित जो धर्म चले, वह सब निराकार से पैदा होने वालों में कहलाए, जिनके दिल झूठे हैं।

अर्स दिल मोमिन कहे, सो दिल हकीकी जेता।
रूहें फिरस्ते अर्स से, इजने उतरे तेता।। ९६ ।।

मोमिनों के दिल को ही अर्श कहा है और वही हकीकी दिल है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि परमधाम से और अक्षरधाम से श्री राजजी महाराज के हुकम से उतरी हैं। उनके दिल को ही हकीकी कहा है।

Nijanand App

रूहें गिरो दरगाह बीच, अर्स अजीम जेताई।
एही अर्स दिल हकीकी, महंमद के भाई।। ९७ ।।

मोमिनों की जमात परमधाम में रहती है। रसूल साहब ने इनके दिल को हकीकी कहा है और अपना भाई कहा है।

एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई।
जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई।। ९८ ।।

यह मोमिन श्री राजजी महाराज की खिलवत के एकतन हैं। यही वाहेदत श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों की अखण्ड परमधाम में श्री राजजी की साहेबी हैं, क्योंकि श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें परमधाम में एकतन और एकदिल हैं।

अव्वल हादी रूहनसों, कौल हैं हक के।
सो ए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए।। ९९ ।।

खेल में आने से पहले मूल-मिलावा में श्री श्यामाजी महारानी और रूहों से इश्क का वार्तालाप हुआ और उस समय श्री राजजी ने खेल में आने का वायदा किया। वह बातें कुरान की आयतों और मुहम्मद साहब की हदीसों में लिखी हैं।

रूहें हमेसा रेहेत हैं, अर्स बका दरगाह मिने।
ए रदबदल हकसों, करी उतरते तिने।। १०० ।।

परमधाम में रूहें हमेशा रहती हैं। खेल में उतरने से पहले उन्होंने ही इश्क का वार्तालाप श्री राजजी से किया।

अर्स अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब।
ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब।। १०१ ।।

जब परमधाम से रूहें खेल में उतरीं, तब श्री राजजी महाराज ने कुरान की आयतों में और हदीसों में हकीकत लिखकर भेजी।

हक हादी रूहन सों, जो हुई मुकाबिल।
सो सुकन सब कुरानमें, लिखी रदबदल।। १०२ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के बीच जो वार्तालाप हुआ, उन्हीं बातों को ही कुरान में रद बदल लिखा है।

हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत।
और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत।। १०३ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी महारानी के हाथ रूहों के वास्ते यह बातें इशारों में लिखकर भेजीं, जिसे रूह मोमिनों के बिना और कोई समझ नहीं पाता।

ए समझे कहिए तिन को, जो कोई दूसरा होए।
ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए।। १०४ ।।

दूसरा कोई तभी समझे जो उस समय कोई होता। यह परमधाम की खास बातें हैं। बिना समझ के बातें करने से उलटा बंध जाते हैं।

Nijanand App

ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक।
ए बारीक बातें खिलवत की, अर्स की गुझ हक।। १०५ ।।

जो परमधाम की इश्क रब्द की मूल-मिलावा की बातें बिना समझे करता है, वह बेईमान है, क्योंकि यह परमधाम की बातें गुझ (गुप्त) हैं। हक के दिल की गुझ (गुप्त) बातें हैं।

ए बातून माएने हक के, जानें हादी मोमिन।
होए ना और किन को, बिना अर्स के तन।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ (गुप्त) बातें श्री श्यामाजी और मोमिन ही जानते हैं। मोमिनों और श्री श्यामाजी के बिना इन बातों की जानकारी और किसी को नहीं है।

दूजा तो कहूं जरा नहीं, कहिए किन की बिध बात।
कहें वेद कतेब और हदीसें, कछू नाहीं बिना हक जात।। १०७ ।।

दूसरा तो कहीं कुछ है ही नहीं, तो यह कौन और किस तरह की बातें कह सकते हैं? वेद, केतब और हदीसों में साफ लिखा है कि श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और मोमिनों के बिना और कुछ नहीं है।

ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तैं करत।
ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूं कित।। १०८ ।।

संसार के ज्ञानी अगुए जो अहंकार में 'मैं' और 'तू' की बातें करते हैं। वेद-कतेब में साफ लिखा है कि इनका कोई कहीं अस्तित्व नहीं है।

लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक कहे जे।
बंझापूत सींग खरगोस, बोहोत भांतों कह्या ए।। १०९ ।।

यह चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड को वेद-कतेब में बांझ का पूत, खरगोश (ससला) के सिर पर सींग और कई तरह से कहा है, अर्थात् जो होते ही नहीं।

बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन।
इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन।। ११० ।।

बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीन सूरतें कही हैं। इन्होंने ही जागृत बुद्धि के ज्ञान से संशय रहित दीन निजानन्द सम्प्रदाय स्थापित किया।

और भी करी बेसक, ए जो कही सुंनत जमात।
इनों लई सब दिलमें, बेसक अर्स बिसात।। १११ ।।

सुन्नत जमात जो मोमिन कहलाते हैं, इनके भी संशय इन्हीं तीन सूरतों ने मिटाए, जिससे मोमिनों ने अखण्ड परमधाम की न्यामत कुलजम सरूप की वाणी को अपने दिल में धारण किया।

तब हुआ रूहन का, हक अर्स कलूब।
याही हक अर्समें, रुह नजरों मिले मेहेबूब।। ११२ ।।

संशय रहित होने के बाद ही मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और इनके अर्श दिल में ही रूहों ने अपने महबूब श्री राजजी महाराज का दर्शन किया।

Nijanand App

तब सुंनत जमात की, बातें सबे बनि आई।
महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही।। ११३ ।।

इस तरह से मुहम्मद की तीन सूरतों ने मोमिनों को अपनी शरण में लेकर उनकी सब इच्छाओं को पूरा कर दिया।

अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखिर।
गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर।। ११४ ।।

सबसे पहले रसूल साहब ने आकर दुनियां को परमधाम का ज्ञान दिया। उसके बाद रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी ने आकर रूहों को ज्ञान दिया। आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से मोमिनों के संशय मिटाकर निर्मल किया और दुनियां के चर-अचर जीवों को बहिश्तों में कायमी दी।

तीन सूरत महंमद की, मिल फुरमाया किया।
भिस्त खोल दुनी फानी को, कायम सुख दिया।। ११५ ।।

मुहम्मद की तीन सूरतों ने मिलकर श्री राजजी महाराज के सभी वायदे पूरे किए। इन्होंने बहिश्तों के दरवाजे खोलकर नाशवान दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

चौदे तबक के बीचमें, तरफ न पाई किन।
हादी गिरो अर्स बीचमें, बैठाए इलमें कर रोसन।। ११६ ।।

जिस परमधाम की, दुनियां के चौदह तबक वालों को जानकारी नहीं थी, उन दुनियां वालों को कुलजम सरूप की वाणी से पहचान कराकर जाहिर कर दिया कि मोमिनों के अर्श दिल में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बैठी हैं।

सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए।
ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आए।। ११७ ।।

श्री श्यामाजी महारानी ऐसी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान लाईं, जिससे सारी दुनियां वालों को पता लग गया कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के लिए सेहेरग से नजदीक हैं।

रूहअल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक।
तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक।। ११८ ।।

श्री श्यामाजी महारानी परमधाम से श्री राजजी महाराज की वाणी खुद लाई हैं और सब जमातों को उन्होंने वाणी से समझाया। यह सब श्री राजजी महाराज के वायदे के अनुसार है।

तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात।
उमतें पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात।। ११९ ।।

मुहम्मद की बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतों ने मिलकर ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि को परमधाम और अक्षरधाम पहुंचाया और दुनियां के जीवों को बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

Nijanand App

अव्वल भी महंमद कह्या, बीच और आखिर।
वेद कतेब सबों कौलों, केहेवत योंही कर।। १२० ।।

वेद और कतेब में सभी जगह सभी वचनों में मुहम्मद की तीन सूरतों की ऐसी ही हकीकत बताई है। उसमें सबसे पहले रसूल साहब को, बीच में श्री श्यामाजी महारानी रूह अल्लाह और आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की बातें लिखी हैं।

हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक।
ए हक गुझ मोमिन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक।। १२१ ।।

श्री राजजी महाराज अपने मुख से स्वयं कहते हैं कि मुहम्मद मेरा माशूक है और मेरे दिल की सब बातें मोमिन जानते हैं जो मेरे आशिक हैं और जिनके दिल यह वाणी सुनकर कुर्बान होते हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, रूहें आसिक इस्क वतन।
बहस करी रूहों इस्क की, आसिक इस्क के तन।। १२२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! रूहें परमधाम में आशिक हैं और वही इनका इश्क है। इन्हीं आशिक रूहों ने अपने परआतम के तनों से, जो इश्क के ही हैं, श्री राजजी महाराज से इश्क का वार्तालाप किया।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १०३४ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ॥

॥ प्रकरण ॥ ५०१ ॥ चौपाई ॥ १८०१० ॥

॥ मसौदा लिख्या है ॥

जो हक हुकम से भाई केसवदास ने रिवाइत करी है। जो हादी ने जुबांन मुबारकसेंती "चौपाई" एक हजार चौंतीस (१०३४) फुरमाई थी, सो यार मोमिनों ने इसके बाब चौदे (१४) माफक अकल अपनी के गम दिल से बांधकर किताब तमाम करी। अब भाई मोमिन इस चौपाइयों के हरफ-हरफ के माएने मगज जाहेर के और बातून के, रूह की नजर खोल के लेंगे दिल अर्स में। और हक के बेसक इलम लदुन्नीसों विचारेंगे और फैल में ल्यावेंगे, तब ही हाल ले हादी के कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के आखिर के मोमिन आकल हैं, और हिदायत हक की लई है। सब बिधों कामिल हैं। जिनके दिल अर्स में सूरत खुदाए की ऊगी है। और ए कलाम भी हादी ने मोमिनों को कहे हैं। तो हुकम से मोमिनों को जरूर सिर लेना है। तिस वास्ते जो कोई अरवा अर्स अजीम की होए और इलम लदुन्नीसों जाग्रत हुई होए। और हुकम मदत करे और हक हादी हिंमत देवे, तो सुरत हक हादी के कदमों बांध के। इस फानी वजूद को उडावे। और बीच अर्स अजीम के उठ खड़ी होए। और मिलाप हमेसगी का सुख लेवें। हादी ने दरवाजा बका का खोल्या है। केतेक यारों को लेय के आप अर्स सिधारे। और अपने जो तन हैं, तिनको बुलावते हैं। ताकि साख ए चौपाई कयामतनामें की—

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, वह नाहीं वतनी अखंड।।

और आज हमारे हादी को बीच परदे के हुए दो महीने और दस रोज हुए। सो आज हमारे मेहेबूब की साल गिरह का दिन है। याने जन्म उच्छव छेहंत्तरमां तमाम हुआ। पचहत्तर बरस और नव महीने और बीस रोज। इस फानी के बीच हम गिरो रबानी के वास्ते। कई कसाले सेहे सेहे गुजरान किया। और कई न्यामतें बका की। इन रूहों के वास्ते जाहेर करी। सो कहां लों लिखों बानी में जाहेर लिख्या है, जो देखेगा

Nijanand App

तिनकी निसां होएगी। सदी महंम्मद सलिल्लाह अलेह वसल्लम की अग्यारे सै और छे (११०६) महीना मुहर्रम, तारीख सत्ताईसमी (२७) पोहोर दिन चढ़ते और हिन्दवी तारीख सम्वत् सत्रह सै इक्यावना बरस (१७५१) भादरवा वद चौदस (१४) वार गुरौ, पहर दिन चढ़ते किताब मारफत सागर तमाम हुई। हुकम हक हादी के सें—चौपाई एक हजार चौतीस (१०३४) मुकाम परना में। लिखतंग गिरो रबानी की पांउं खाक हमेसा चाहत केसवदास की परनाम कोटान कोट डंडवत साथ सबको अविधारजो जी प्रीत की रीत सों झाझा सनेह प्यार से।

॥ मारफत सागर सम्पूर्ण ॥

Nijanand App